रात्रि क्लास 20/9/64 :– एक तरफ मम्मा खुश–खैरि(यत) पूछती है और एक तरफ ये तीन कम्बाइंड पूछते हैं। बाप, दादा, माँ। माँ तो है गुप्त। ऐसे कोई सतसंग वा घर में पूछते नहीं है। वहाँ बाप अलग, दादा अलग, माँ अलग (पू)छेंगी। अब ये शास्त्र में तो बातें न हैं। ये अनुभव की बातें हैं। बच्चों को भासना आती है, जिस राज़ को और कोई जान नहीं सकते, सिवाय संगमयुगी तुम ब्राह्मणकुल भूषण। प्रजापिता ब्रह्मा तो मशहूर है। नई रचना होगी तब तो नया युग, नया धर्म होगा। ये सब नई बातें हैं। (सि)द्ध होता है गीता ये कोई परंपरा से न चली है। ये तुम बच्चे समझते हो। बातें ही और हैं। कृष्ण भगवानुवाच्य, अर्जुन प्रति युद्ध का मैदान आदि कुछ है नहीं। न रावण से, न जिस्मानी मनुष्य की मनुष्य से लड़ाई होती है। बाहुबल का युद्ध का मैदान द्वापर से चला है (वो) भी बहुत समय बाद, जब धर्मों वालों की वृद्धि हो एक/दो पर चढ़ाई होती है। जब बहुत मनुष्य सम्प्रदाय होती है तब चढ़ाई करने की टेम्पटेशन होती है, फिर बाद में लड़ाइयाँ शुरू होती हैं। ये तो तुम बच्चों (को) समझाया जाता है। (कंस) और कृष्ण का भी दिखाते हैं। कंस को (मा)रा है। तो कंस की भी राजाई होगी, कृष्ण की भी राजाई होगी। कंस तो असुरों का नाम है। शास्त्र में है तब हम कहते हैं, नहीं तो कंस अक्षर का अर्थ नहीं निकलता। अभी है रावण राज्य। पाप आत्मा मनुष्यों को ही कंस–जरासंधी आदि नाम दिए जाते हैं। तुम अब समझ गए हो। मनुष्य तो भटकते रहते। .... कुछ पता नहीं हम क्यों धक्के खाते हैं। भक्तिमार्ग जब खलास होता है तब तो भगवान को आना ही है। सब दुखी हैं, तब भगतों का रखवाला रक्षा अर्थ आते हैं। रक्षा की जाती है दुखियों की। भक्ति दुखी करती है। थक जाते हैं। बाप कहते, बच्चे, थक गए हो। आधा कल्प भक्ति की है, अब सृष्टिचक्र को फिरना है ज़रूर। इन व(र्णों) में आना है ज़रूर। गायन है; परन्तु चक्र कैसे फिरता है, ये कोई नहीं जानते हैं। सुख का सागर, शान्ति का सागर तो बाप है। तुम उ(स)से पूरा वर्सा पाने पुरुषार्थ कर रहे हो। अब समय थोड़ा है। देह सहित देह के सभी संबंधों के नाते तुड़ाय अपने साथ जुड़ाते हैं। इससे ही तुम पवित्र बन पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। पुरुषार्थ कर योग से विकर्म विनाश करने हैं। बाबा समझाया है, शिव पर बलि चढ़ते हैं तो विकर्मों की सज़ा खाय चुक्तू करते हैं। कर्मातीत बन जाते हैं; परन्तु वापस नहीं जाते। फिर जन्म मिलेगा। तुमको योग से विकर्म विनाश करने हैं। काशी कलवट नहीं खाना है। कलवट खावेगा; परन्तु ज्ञान तो नहीं है ना। (ये) तो श्रीमत पर चलना है। बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं। ये भी कहते हैं, बाबा समझाते हैं। तो वो गुप्त हो गया ना। निराकार शिवबाबा को बहुत याद करते हैं। निराकार उपासी बहुत हैं फर्रुखाबाद तरफ। उनको मालिक ही समझते हैं। अब मालिक कहते– पवित्र बनो, काम पर जीत पहनो। अच्छा, ये बापदादा की बच्चों से चिटचैट हुई। योग शिवबाबा से ही है। शिवबाबा ही इन द्वारा मत देते हैं। उस मत पर बच्चों को चलना है। बाबा सुख की मत देते हैं, फिर जितना जिसकी तकदीर में है। मत पर चलने में कल्याण

होता है। न चलने से अकल्याण होता है ज़रूर। दुनिया में सब बेसमझ हैं, पतित हैं। रावण ने बेसमझ, पतित बनाय दिया है। जिसको परमपिता कहते उनको जानते नहीं। ऐसा बेसमझ कोई होता नहीं। गीता में शिव का नाम होता तो सारी दुनिया जान लेती। ड्रामा में ये पार्ट है। इस्लामी, बौद्धी आदि अपने धर्म को कब नहीं भूलेंगे। ये ही भूलते हैं। धर्म प्रायःलोप हो जाता है। सिर्फ देवताओं के चित्र हैं। तो फिर बाबा आया है, तुम जानते हो। जानते हुए भी पूरा पुरुषार्थ नहीं करते हैं, भूल जाते हैं। बाप कहे, मुझे याद करो। बच्चे कहे, बाबा, हम आपको भूल जाते हैं; क्योंकि आप विचित्र हैं। बाप समझाते हैं, इनको भी समझाते हैं, बाबा कहते हैं तो याद क्यों नहीं करते हो? याद करते खाओ फिर तुम भूलते क्यों हो? अपने बाप को तो जनावर भी नहीं भूलते। तुम अपन को आत्मा समझ बाप को याद क्यों नहीं करते हो? बाबा भी कहते हैं ना मैं भूल जाता हूँ। तुमसे भी ऐसा हा(ल) होता है या कोशिश ही नहीं करते हो। अगर तुम सदैव याद करते हो, फिर तो मेरे से पद तुमको ऊँचा मिलना चाहिए। तुम बताते नहीं हो, लज्जा आती है। बाबा तो झट बताते हैं मैं भूल जाता हूँ। भक्तिमार्ग में भी ना० को भूल जाते थे तो चुनडरी पहनते थे। अब भी भूल जाता हूँ। तुमको कोई तरकीब अच्छी रीति याद करने की हो तो बताओ, हम लेवें। कोई भी तरकीब नहीं बताते हो। ॐ